कीर्तन सोहिला

सोहलि रागु गउड़ी दीपकी महला १

ੴ सतगिुर प्रसादि॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥
तितु घरि गावहु सोहिला सिविरहु सिरजणहारो ॥१॥

तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥
हउ वारी जितु सोहलै सदा सुखु होइ ॥१॥

रहाउ ॥

नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥
तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥

स्मबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥
देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥

घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि॥
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि॥४॥१॥

रागु आसा महला १ ॥

छअि घर छअि गुर छअि उपदेस ॥

गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥१॥

बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥

सो घरु राखु वडाई तोइ ॥१॥

रहाउ ॥

वसिुए चसअिा घड़ीआ पहरा थती वारी माहु होआ ॥

सूरजु एको रुति अनेक ॥

नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥

रागु धनासरी महला १ ॥

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥

धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती

॥१॥

कैसी आरती होइ ॥

भव खंडना तेरी आरती ॥

अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥

रहाउ ॥

सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि किउ सहस मूरति निना एक तोही ॥

सहस पद बमिल नन एक पद गंध बनि सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥

तसि दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥

गुर साखी जोति परगटु होइ ॥

जो तसि भावै सु आरती होइ ॥३॥

हरि चरण कवल मकरंद लोभति मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥

क्रपि जलु देहि नानक सारगि कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

कामि करोधि निगरु बहु भरिआ मलि साधू खंडल खंडा हे ॥

पूरबि लिखित लखे गुरु पाइआ मनि हरि लिवि मंडल मंडा हे ॥१॥

करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥

करि डिंडउत पुनु वडा हे ॥१॥

रहाउ ॥

साकत हरि रिस सादु न जाणिआ तनि अंतरि हउमै कंडा हे ॥

जउि जउि चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डिंडा हे ॥२॥

हरि जिन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥

अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥

हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥

जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥४॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥

ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥

अउध घटै दिनसु रैणारे ॥

मन गुर मलि किाज सवारे ॥१॥

रहाउ ॥

इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥

जसिहि जिगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥

जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बिसेरा ॥

नजि घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि नि होइगो फेरा ॥३॥

अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥

नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥५॥